देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयताम्।। ऋ० १/८६/२

Impact Factor
8.642

ISSN : 2395-7115
June 2025
Vol.-21, Issue-6

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

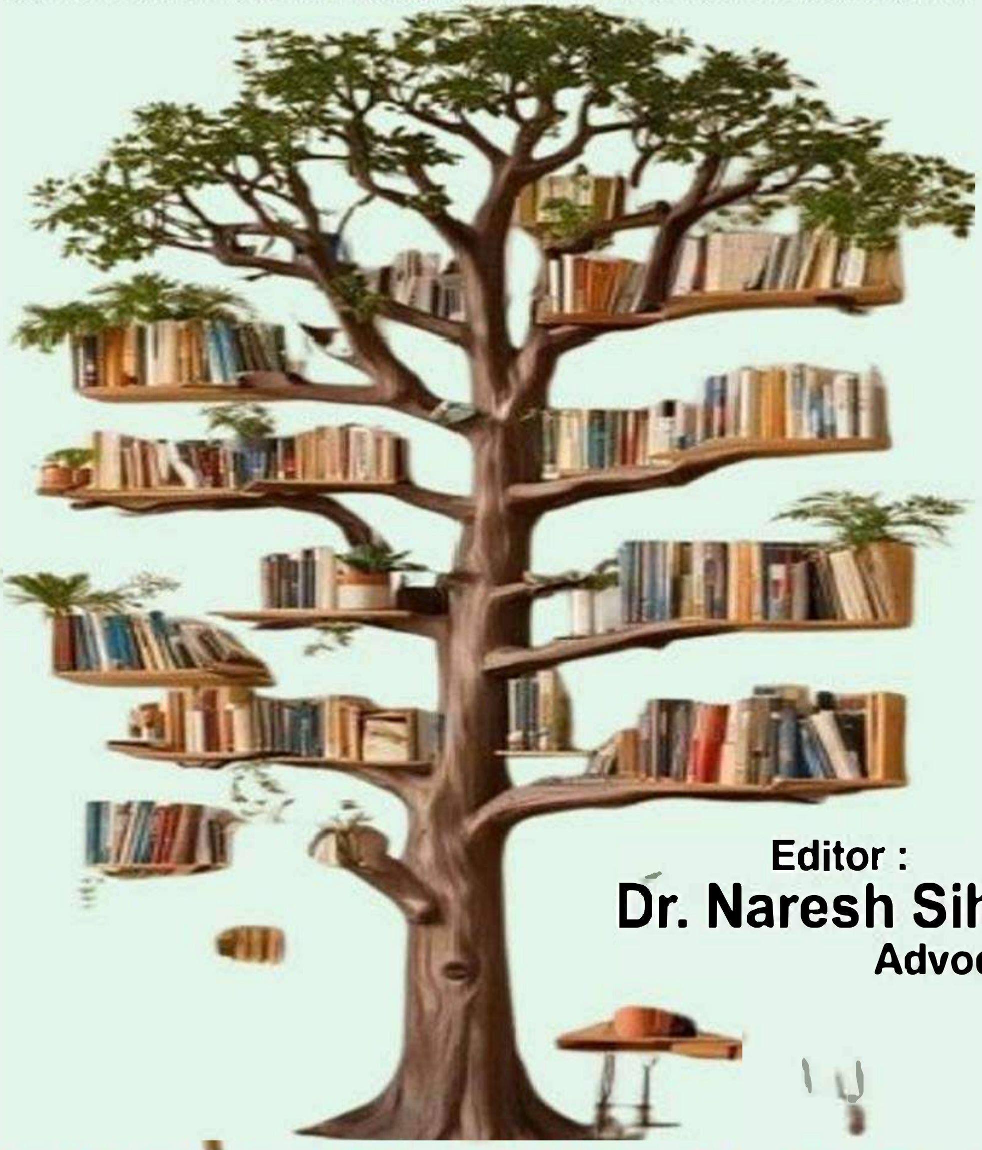

Editor :
Dr. Naresh Sihag
Advocate

Publisher :
Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)
202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

14.	The Ideological Shift: From Reform to Consolidation of British Rule in India	Dr. Mukesh Kumar	79-82
15.	प्राचीन भारत में जाति एक सामाजिक परिघटना के रूप में	राहुल सोनी	83-86
16.	तानी समुदाय की लोक-संस्कृति : 'जंगली फूल' उपन्यास के संदर्भ में	लक्ष्मी.एम.एस	87-91
17.	Sustainable Development among the Santhal Tribes of Jamui district in Bihar "A critical study."	Pyare Lal Kumar	92-95
18.	ਕਰਤਾਰ ਸਿੰਘ ਦੁੱਗਲ ਦੀਆਂ ਕਹਾਣੀਆਂ ਦਾ ਥੀਮਿਕ ਅਧਿਐਨ (ਅੱਗ ਖਾਣ ਵਾਲੇ ਅਤੇ ਡੰਗਰ ਦੇ ਸੰਦਰਭ ਵਿੱਚ)	ਡਾ. ਲਖਵਿੰਦਰ ਕੌਰ	96-99
19.	हिंदी नाटक : परम्परा की खोज	रेखा जोशी, डॉ.रूपेश कुमार	100-105
20.	डॉ. विद्या बिंदु सिंह की कहानियों में नारी	जे.अशोक कुमार जैन, डॉ. अनुराधा पाकलपाटि	106-111
21.	अक्षरत्रयविचारः	Dr. R. Seshadri	112-116
22.	Anne Frank: Global symbol of Holocaust	VictimVikram Rajat Dungdung	117-120
23.	भारत में पंचायतीराज व्यवस्था का एक विस्तृत अवलोकन	डॉ. मोनिका भाटी	121-123
24.	सीतामढ़ी जिला की लोक संस्कृति का ऐतिहासिक अध्ययन	गोविन्द झा	124-131
25.	পঞ্চতন্ত্র গ্রন্থের একটি সংক্ষিপ্ত পর্যালোচনা	SUROJIT ADHIKARY,	132-135
26.	बाल साहित्य का बच्चों पर प्रभाव	कुमारी निधि	136-140
27.	"जनजातीय विद्रोह और आंदोलनों का स्वतंत्रता संग्राम में योगदान: छत्तीसगढ़ के विशेष संदर्भ में"	गोवर्धन प्रसाद सूर्यवंशी	141-148
28.	महिलाओं के विरुद्ध होनेवाले अपराध के नियंत्रण में शिक्षा की भूमिका	भूपेन्द्र कुमार	149-152
29.	समकालीन दृष्टि में निर्मल वर्मा और कृष्णनाथ की	रीना कुमारी, डॉ. मीनू	153-159

4. वही, पृ ० 39
5. सिंह, बच्चन . (2018) . हिंदी नाटक . दिल्ली . राधाकृष्ण प्रकाशन . पृ ० 15
6. वही, पृ ० 19-20
7. वही, पृ ० 22
8. चातक, गोविंद . (2023) . हिंदी नाटक : इतिहास के सोपान . नई दिल्ली . तक्षशिला प्रकाशन . पृ ० 22-23
9. वही, पृ ० 23
10. शुक्ल, रामचंद्र . (2017) . हिंदी साहित्य का इतिहास . इलाहाबाद . लोकभारती प्रकाशन . पृ ० 310

ई मेल: rekhajoshi122@gmail.com मो. नंबर: 7983141055

www.bohalshodhmanjusha.com Bohal Shodh Manjusha ISSN: 2395-7115
Impact Factor: 8.642 June 2025 Page No. : 106-111
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

डॉ. विद्या बिंदु सिंह की कहानियों में नारी

जे.अशोक कुमार जैन,
शोधार्थी UP23P9650002,
डॉ. अनुराधा पाकलपाटि,
शोध निर्देशिका,
हिंदी विभाग वेल्स इंस्टिट्यूट ऑफ़ सॉइंस टेक्नोलॉजी एंड एडवांस स्टडीज, पल्लावरम, चेन्नई

सार:
हिंदी साहित्य में नारी की भूमिका और उसका चित्रण समय के साथ बदलता आ रहा है| हिंदी कहानियों में नारी पात्र विभिन्न रूपों में दर्शाया गया है- कभी पारंपरिक रूप में, आदर्श नारी, शोषित नारी, आधुनिक-स्वतंत्र और संघर्षशील नारी आदि के रूप में चित्रण मिलता है| डॉ.विद्याबिन्दु सिंह की कहानियों में नारी पात्रों का चित्रण यथार्थ रूप में मिलता है| भारतीय समाज में नारी का शोषण, निरर्थकता आदि अनेक मंतव्य विषयों को छूते हुए लेखिका ने अपनी कहानियों के माध्यम से नारी जीवन के हर पहलू को उजागर किया है| नारी के प्रति समाज में जो भावनाएँ थीं, उन भावनाओं को अपनी लेखनी के माध्यम से व्यक्त किया है|
मूल शब्द: नारी, शोषण, भारतीय संस्कृति, समाज, यथार्थ जीवन|

प्रस्तावना:

"यत्र नार्यस्तु पूजयन्ते रमन्ते तत्र देवता:" इस संस्कृत कथन के अनुसार हमारे भारतीय संस्कृति में नारियों का स्थान सर्वोच्च है, क्योंकि भारतीय समाज में हर कोई व्यक्ति किसी-न-किसी रूप में पवित्र नाते के साथ नारी से जुड़ता है| वही जुड़ना उनके लिए एक रक्षा कवच भी बन जाता है| इसी महत्त्व को समझकर ही नारी को भारतीय संस्कृति में देवी, शक्ति का स्वरूप समझा जा रहा है | तथा समाज में हर स्थिति में, हर क्षेत्र में, हर पल में नारी का स्थान अति महत्त्वपूर्ण रहा है और आगे भी रहेगा | अत: प्राचीनकाल में वेदों में, पुराणों में नारी को आदर्श रूप माना गया है|

प्राचीन काल में वैदिक साहित्य में नारी को ज्ञान, कला, शक्ति का स्रोत भी माना गया है | नारी के महत्त्व को समझाते हुए सती, अनुसूया, द्रोपदी और सीता जैसी महान नारियों के रूप में हमारी भारतीय संस्कृति में उल्लेखित किया गया है| नारी अपने कर्तव्य के साथ-साथ वे अपने राष्ट्र के प्रति सजग कर्मठता के साथ कार्य करती है|

स्वतंत्रता संग्राम में भारतीय-महिलाओं का योगदान अनुकरणीय रहा है, जैसे झांसी रानी लक्ष्मीबाई, सरोजिनी नायडू, मैडम भीकाजी कामा आदि आदर्श नारियाँ भी शामिल हैं | राष्ट्रीय विकास में महिलाओं का योगदान तो रहा ही है, साथ ही साथ गृहस्थ जीवन एवं समाज का कल्याण, निर्माण आदि में अति महत्त्वपूर्ण भूमिका नारियों की ही रही है | अत: नारी का योगदान भारत के लिए प्रशंसनीय है | इसी प्रकार डॉ. विद्याविन्दु सिंह की कहानियों में भी नारी पात्र को विभिन्न रूपों में दर्शाया गया है| उन्हीं की कहानियों के संग्रह में से निम्नलिखित कहानियाँ ली गई है|

बनदेई

डॉ. विद्याविंदु सिंह की अनेक लोकप्रिय कहानियाँ हैं| उनमें से 'बनदेई' कहानी एक अनूठी कहानी है| यह कहानी पाठकों की रोचकता को निरंतर कायम रखनेवाली बेजोड़ कहानी है| इस कहानी के माध्यम से नारी शक्ति के प्रबोध, सशक्तिकरण के बारे में परिचय मिलता है| इस कहानी में एक साहसिक कारनामिक लड़की के कार्यों का वर्णन किया गया है| प्रस्तुत कहानी में एक बूढ़ी बनियाइन और दूसरी लंगड़ी बनियाइन दोनों मिल-जुलकर एक लड़की 'बनदेई' का पालन-पोषण करती हैं| वास्तव में खुद की संतान से ज्यादा प्यार वे दोनों बनदेई से करती हैं| बनदेई का खाने से लेकर पढ़ाई तक सब चीज़ों का विशेष रूप से ध्यान रखा जाता है| शिक्षा पूरी होने पर वैवाहिक बंधन के लिए बूढ़ी बनियाइन एवं लंगड़ी बनियाइन दोनों तैयार होते हैं, तब बनदेई कहती है कि "देखो-माई! तुम नानी का सहारा थीं और नानी तुम्हारा| अब मैं तुम दोनों का सहारा हूँ| जब तक तुम दोनों हो, तुम्हारा सहारा मुझे भी है| आगे भगवान तो सबका सहारा है| क्या उस समय भगवान ने सहारा नहीं दिया था, जब मुझे जंगल में मरने को फैंक दिया गया था?"[1]

इस प्रकार 'बनदेई' अपने सर्वोत्तम गुणों को स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करती है| कुछ दिनों के बाद बनदेई डॉक्टर बन जाती है, फिर भी वह अपने अतीत को भूलना नहीं चाहती है | और वह दोनों बनियाइन का ध्यान रखते हुए अपना जीवन सार्थक बनाती है| इस कहानी के माध्यम से लेखिका ने नारी की स्वाभिमानी, नारीशक्ति का प्रबोध और नारी सशक्तिकरण के बारे में उजागर किया है|

काशीवास

वृंदा सुमेर की पत्नी है| अपने परिवार को संभालती है| घर-गृहस्थी को देखती है| सास-ससुर के निधन के बाद उसके देवरों को संभालने की जिम्मेदारी उस पर आ जाती है| उसके भी जुड़वा बेटे होते हैं| देवरों की शादी करवाती है| कुछ दिन बाद पता चलता है कि वृंदा के पति को ब्रेन ट्यूमर की बीमारी है| उसके पति भी गुजर जाते हैं| वृंदा की देवरानियाँ उसे पसंद नहीं करती हैं| वृंदा को परिवार के सदस्य तिरस्कार करने लगते हैं| इस कारण वृंदा टूट चुकी थी| एक दिन वृंदा परिवार, बच्चों को छोड़कर चली जाती है| मूर्छित अवस्था से उसे विधवा आश्रम में पाया गया है, वह अपना नाम नहीं बता रही थी| अंत में वह अपना

नाम सेवा बताती है, वह वहाँ के लोगों की सेवा करने लगती है| एक दिन वृद्धाश्रम में एक महिला आकर, सभी को भोजन, कपड़े पुण्यतिथि के अवसर पर दान में देती है| सेवा को स्मरण होता है कि उसके पति सुमेर की भी आज पुण्यतिथि है, वह अपने हिस्से में मिला भोजन और कपड़े एक वृद्ध महिला को पहनाकर भोजन खिलाती है| वह पूरे दिन उपवास रहती है- "वृंदा को संतोष हुआ| अपने पति की पुण्यतिथि पर मैंने भी तर्पण किया है मेरा 'काशीवास' पूरा हो गया| उन्होंने उसी दिन उपवास करके अपार शांति प्राप्त की"|[2] प्रस्तुत कहानी की नायिका वृंदा एक गृहिणी, पत्नी और दाता के रूप में अपना कर्तव्य पूर्ण करती है|

सुरसती बुआ

'सुरसती बुआ' कहानी की मुख्य पात्र है 'सुरसती बुआ'| माँ बाप के गुजर जाने के बाद अपने परिवार को देखने के लिए मायके आ जाती है| वह मायके में आकर देखती है कि वहाँ की हालत बिलकुल अच्छी नहीं है| उसके घर में रखे धन को भी उसका एक रिश्तेदार निकाल लेता है| बाद में सुरसती बुआ ससुराल वापस चली जाती है| वहाँ उसकी सास अपने बेटे की दूसरी शादी कर देती है| पति और ससुरालवालों के तिरस्कार के बाद पति को छोड़कर वह मायके वापस आ जाती है और वहाँ की स्थिति को संभालती है| भाई की शादी कराती है पर बहु उसे ताने मारती रहती है, सुरसती बुआ के दुःख को कोई समझ नहीं पाते| समाज उसे ताना-मारना नहीं छोड़ता है| वह नीम के पेड़ के नीचे बैठकर झूमती है और लोग समझते हैं कि उस पर 'जालपा माई' (देवी) आ बसी है| उसकी चर्चा दूर-दूर तक पहुँच जाती है और सभी लोग अपने घर में कोई भी शुभकार्य हो तो सुरसती बुआ का दर्शन करने तथा उनका आशीर्वाद लेने आया करते थे| सुरसती बुआ वृद्ध हो जाती है, दिन बीतते जाते हैं लोग जब जालपा माई का दर्शन करने आते तो उस देवी में सुरसती बुआ की ही छवि महसूस करने लगते थे| वह अपने जीवन भर संघर्ष करती रही लेकिन कोई उसे समझ नहीं पाए| इस प्रकार समाज में स्त्री के जीवन का आंकलन करना बड़ा कठिन कार्य है| इनमें से 'सुरसती बुआ' कहानी एक अनूठी कहानी है| "मत जाओ अकेले, लौट चलो| कोई आएगा तो जाना, नहीं तो किसी की लढ़िया से चली जाना"|[3]

शिवपुरी की गंगा भौजी

'गंगा भौजी' के कर्तव्यपरायण,संघर्ष व सहयोग आदि का इस कहानी में उल्लेख किया गया है| उसकी बहन की मृत्यु के बाद बहन के बच्चों को अपने बच्चों की तरह पालन पोषण करती है| वह बहन के बेटे मंगल को पढ़ा लिखा कर अच्छा इंसान बनाना चाहती है| गलत लोगों की संगत में पड़कर वह शराब पीना शुरू कर देता है| गंगा उसकी शादी करा देती है, किंतु शादी के बाद भी वह अपनी पत्नी के साथ बुरा व्यवहार करता है| इस बीच गंगा के पति की तबियत ज्यादा खराब हो जाती है| गंगा पति सेवा में लग जाती है| इसे देखकर मंगल सुधर जाता है| इस तरह इस कहानी में बताया गया है कि स्त्री चाहे तो प्रेम व्यवहार से पत्थर को भी पिघला सकती है| "शिवपुरी की गंगा भौजी ने सरलानी भाई के पाँव पकड़

लिया भैया! आज तक तुमसे कुछ नहीं माँगा, आज माँग रही हूँ मेरी भाभी को आज के बाद दु:ख मत देना"।[4]

सोना काकी

इस कहानी की मुख्य पात्र है 'सोना काकी'। वह सर्वगुण संपन्न है। फिर भी उसकी परिवार में कोई इज्जत नहीं है । उसका विवाह एक संपन्न परिवार में हुआ। कम दहेज देने के कारण उसके सास उसके साथ बुरा व्यवहार करती है। उसकी सास उसके गहने एक-एक करके उतार लेती है । उसका पति माता-पिता के विरुद्ध कोई काम नहीं करना चाहता। वह अपने भाई की बीवी की तारीफ़ करता है कि वह दहेज ज्यादा लाई है । सोना काकी अपने ससुराल में जुल्मों को सहन करती है। किंतु खुश परिवार का सपना देखती है पर वह भी टूट जाता है । इस तरह आज के युग में दहेज के नाम पर नारियों का शोषण होता जा रहा है । "जो जितना चाहता है वह भगवान को उतना ही प्रिय हो जाता है"।[5] कह देना कि उनकी बेटी कमजोर नहीं है समय पर सब ठीक कर देगा ।

सुगनी

'सुगनी' जन्मजात बौनी है। उसकी नानी उसे पसंद नहीं करती है, इसलिए उसकी दादी उसे अपने साथ ले जाती है। सुगनी का एक छोटा भाई है। जो उसे हमेशा मारता-पीटता है। फिर भी सुगनी उसके साथ प्रेम का व्यवहार करती है।

सुगनी की दादी अपनी आधी वसीयत उसके नाम कर देती है। यह देख उसका भाई उसे मारने लगा। एक दिन सुगनी के पिता ने उसको अनाथालय में डाल दिया। वहाँ उसने सबका मन जीत लिया। सुगनी ने कुछ पैसों से सिलाई का स्कूल खोल दिया और लड़कियों को प्रशिक्षण देने लगी। इस तरह वह सबकी प्रेरणा का स्रोत बन गई। "आपकी बहू है आपकी पोती है। जब चाहे ले जाएँ, मैं क्यों रोकूँगी?"[6] इस प्रकार गरीब और विकलांग बालिकाओं की पढ़ाई का वह खर्च वहन करती है। उन्हें नि:शुल्क प्रशिक्षण भी देती है । आज सुगनी जाने कितने लोगों के लिए सगुन बन गई है।

पत्थर

आशा एक आदर्श लड़की है, वह अपने कामों को करने में सक्षम है। आशा अपने माता-पिता की लाड़ली है। उसके चार भाई है। चारों की शादी हो चुकी थी। उसके माता-पिता बुढ़े थे। आशा ही उनके आशा की किरण थी। वह चाहती थी महाविद्यालय की प्रोफेसर बने। किंतु घर की स्थिति के कारण उसका सपना पूरा ना हो सका। इसलिए वह एक विद्यालय में टंकण का कार्य करने लगी। और घर का खर्च चलाने लगी। एक दिन उनके मकान मालिक ने उन्हें मकान खाली करने को कह दिया। बेटों ने मदद करने से मना कर दिया । आशा के पिता गाँव में घर बनाना चाहते थे। आशा विवाह नहीं करना चाहती थी। वह अपने पिता को न्याय दिलाना चाहती थी। इस तरह यहाँ आशा का आत्मविश्वास दिखाई पड़ता है ।आशा आई! माँ ने कहा, "बेटी,हमें समाज को भी देखना है । यदि तुम बुरा ना माने तो मकान के

पत्थर पर भी अपने पिता का ही नाम डालने दो| तुम्हें तकलीफ तो होगी, पर हमारी प्रतिष्ठा बच जाएगी| लोगों को कुछ कहने का मौका हम क्यों दे?”[7]

माँ की बात मानकर आशा ने अपने घर के नाम का पत्थर अपने पिता के नाम से लगाया ताकि लोगों को लगे कि उसके पिता बेटी की कमाई नहीं खाते है| घर बन जाता है | चारों भाई गृहप्रवेश में आते हैं| वह थक गई है | उसे ऐसा प्रतीत होता है जैसे एक बड़ा भार उसके मन में से उतर गया|

निष्कर्ष:

इन कहानियों के माध्यम से पता चलता है कि समाज में नारियों के लिए कोई प्रतिष्ठित स्थान नहीं था| नारियों की आवाज़ को दबाया जा रहा था| उसके प्रेम, त्याग सद्भावना को समझा नहीं जा रहा था|

समाज में नारियों के प्रति हो रहे इस तरह के कुरीतियों को बदलने की आवश्यकता थी| उन आवश्यकताओं को डॉ.विद्याविंदु सिंह ने अपनी कलम के माध्यम से समाज को स्पष्ट रूप से अवगत कराया है| जैसे सुगनी, गंगा भौजी, सोना काकी, आशा, वृंदा, सुरसती बुआ आदि पात्रों से पता चलता है कि नारी के प्रति दृष्टिकोण अलग था|

आलोचक कहानीकार डॉ. विद्याविंदु सिंह ने अपने काल की नारियों के संघर्षमय जीवन को यथार्थ और प्रासंगिक रूप से वर्णित किया है| पर आजकल की परिस्थितियों में नारी के प्रति समाज का दृष्टिकोण बहुत बदल गया है| आजकल की नारियाँ अकेलेपन, स्वतंत्रता, स्वाभिमान, अस्तित्व की भावनाओं को कायम करना चाहती है, तथा अहम की भावनाओं से ओतप्रोत है| पुरुष के साथ कंधे से कंधे मिलाकर हर काम में आगे बढ़ना चाहती है| यह कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी कि पुरुष से एक कदम आगे नारियाँ बढ़ना चाहती है|

उपर्युक्त धारनाओं के अनुसार आज की नारी को भारतीय संस्कृति के लक्षणों को अपनाने की परम आवश्यकता है | नारी जब तक सुसंस्कृत नहीं बनती तब तक भारत का विकास संभव नहीं है| भारत की हरेक नारी को चाहिए कि वह भारतीय संस्कृति एवं परंपराओं को अपनाएँ, जिससे भावी भारतीय पीढ़ियों का जीवन उज्ज्वल होगा|

संदर्भ सूची :

1.बनदेई, डॉ.विद्याबिंदु सिंह, प्रतिभा प्रतिष्ठान, प्रथम संस्करण(2007), पृ. 14

2.काशीवास, डॉ.विद्याबिंदु सिंह, ग्रंथ अकादमी, प्रथम संस्करण(2012), पृ. 25

3.सुरसती बुआ, डॉ.विद्याबिंदु सिंह (बनदेई) प्रतिभा प्रतिष्ठान, प्रथम संस्करण(2007), पृ. 18-36

4.शिवपुरी की गंगा भौजी, 'बनदेई', डॉ.विद्या विन्दु सिंह प्रतिभा प्रतिष्ठान, प्रथम संस्करण(2007), पृ. 76